THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186027
UNIVERSAL
LIBRARY

तीन-फूल

पहिला फूल—

आँसू—

दूसरा फूल—

आत्मतोष

तथा

मेमना और बालिका—

तीसरा फूल—

देहरादून-दर्शन—

लेखक—

श्री रूपनारायण चतुर्वेदी 'निधिनेह'

प्रकाशक—

पद्मा एण्ड कम्पनी,

फुलट्टी बाज़ार, आगरा।

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक—
पद्मा एण्ड कम्पनी,
फुलट्टी बाज़ार, आगरा।

सम्वत् २०१३
सन् १९५६
प्रथमवार १०००
मूल्य बारह आना

मुद्रक—
दी कौरोनेशन प्रेस,
छिलीईट रोड, आगरा।
फ़ोन नं० १७१

मङ्गल कामना

श्री रूपनारायण चतुर्वेदी 'निधिनेह' को मैं उनके बाल्यकाल से ही जानता हूँ। उनका विद्यार्थी-जीवन एक प्रतिभाशाली जीवन रहा है। साहित्य और व्यायाम में उनकी समान अभिरुचि रही है। अपनी साहित्यिक अभिरुचि से प्रेरित होकर उन्होंने ये 'तीन फूल' प्रस्फुटित किये हैं। उनके द्वारा किये (१) श्री जयशङ्करप्रसाद 'प्रसाद' लिखित 'आँसू', (२) पोप लिखित 'दी क्वाइट लाइफ़' और विलियम वर्ड्सवर्थ लिखित 'दी पैट-लैम्ब' तथा (३) श्री व्रजनारायण चकबस्त लिखित 'देहरादून की सैर' शीर्षक कविताओं के काव्यानुवाद मैंने पढ़े। श्री चतुर्वेदीजी इन अनुवादों के करने में निःसन्देह सफल सिद्ध हुए हैं। अनुवाद तो तीनों ही सुन्दर हैं; पर, पहले फूल 'प्रसादजी' के 'आँसू' का उर्दू अनुवाद इतना सुन्दर, अपनी छटा में अनौखा, सुगन्ध में सरस और वास्तविकता में सराहनीय है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह 'निधिनेहजी' को साहित्य-जगत् की सेवा करने के लिये इसी प्रकार प्रेरित-प्रभावित करते हुए उन्हें दीर्घ जीवन प्रदान करें जिससे उनके द्वारा साहित्योद्यान में नित नये सुन्दर सुमन विकसित होते रहें।

पण्डिताश्रम,
शीतलागली, आगरा।

मङ्गलाकांक्षी—
व्रजनाथ शर्मा गोस्वामी
(रायबहादुर)

कुछ अपनी भी—

धुन सृजन का कोई रूप है यह तो पता नहीं, पर मन में जब मौज उठे तो कुछ कर ही गुज़रते हैं; उसे रोकना तो सीखा ही नहीं। उस दिन बेटीजी की फ़रमायश हुई कि मैं "प्रसाद" के आँसू की प्रति अपने साथ लिए जाऊँ और जो स्थल बी० ए० के कोर्स में है उसके पूछने पर पत्रों द्वारा स्पष्ट कर-करके भेजता रहूँ, उसे दूर देश में बैठा हिन्दी पढ़ाता रहूँ पत्रों द्वारा। बात तो माननी ही थी। पहला अवसर था "प्रसाद" का यह काव्य पढ़ने का; आद्योपान्त पढ़ गया। लगा कि चोट खाया भावुक हृदय कहीं छिछली, कहीं गहरी व्यंजनाएँ कर रहा है, और आँसू की ओट वह तो सूफ़ियों की बातें करने लग जाता है। ज़िन्दा होता तो गले लगा लेता ऐसे अज़ीज़ को। रचना में झलक मिली उर्दू की तर्ज़, तहज़ीब, भाव-भंगिमा की। एकदम एक विचार चमक गया और पहली चार पंक्तियों *"जो घनीभूत पीड़ा थी"* आदि के नीचे लिख ही तो गया *"मुरक्कब टीस याद बन आई, ग़म के आलम में अश्के बीनाई"*। धुन आई और पूरी हुई, पर कुछ अपने ऊपर लगाए गए प्रतिबन्ध बड़े बाधक साबित हुए और कहीं-कहीं कविता की आत्मा का हनन कर बैठे। मसलन प्रसाद की चार पंक्तियाँ दो सतर की शेर में ही उतार दी जाँय, अन्तिम तुकान्त का निर्वाह होता रहे इत्यादि। *'निज कवित्त केहि लाग न नीका'* तब अपनी चीज़ अपने को पसन्द क्यूँ न आए। तारीफ़ से तो ईजानिब फूल जाते हैं, तिगने।

कह दूँ कि कभी-कभी प्रसाद की चार पंक्तियाँ आधी रात तक चक्कर डालती रही हैं और कमर के पीछे हाथ बाँधे कमरे में टहलता ही रह गया हूँ। होश ख़ता हो जाता था, विचार रुक जाता था, भाव सुलझाए नहीं सुलझता था और कभी पन्ने के पन्ने बिम्ब भाव में रंगे चले जाते थे। कभी अपने पर झुँझलाहट आई, खीझ हुई और कभी मन ने अपनी दाद दी। जहाँ भी क्लिष्ट भाव (जिनकी प्रसाद में कमी नहीं है) साफ़ उतर गए, वहाँ तबियत फड़क गई। फिर प्रशंसा के लिये रह क्या गया? अपनी-अपनी समझ ही तो ठहरी। वह कह गए—

क्यों व्यथित व्योम गङ्गा-सी
छिटका कर दोनों छोरें
चेतना तरंगिनि मेरी
लेती है मृदुल हिलोरें

और हम कहते हैं फ़कत *"एक तस्वीर हिलती दामन में, दिल की फ़र्याद मिलती दामन में"* फिर प्रसाद फ़र्माते हैं—

"तुम सत्य रहे चिर सुन्दर
मेरे इस मिथ्या जग के
थे केवल जीवन संगी
कल्याण कलित इस मग के"

और 'बेदिल साहब' तर्जुमा करते हैं *"मेरे ईमान मेरी जाँ तुम हो, मेरे अर्मान औ' ज़ुबाँ तुम हो"*। ज़ाहिर है पद्यानुवाद केवल भावानुवाद है शब्दानुवाद नहीं। आज़ादी खोकर

कविता की तो गुनाह किया। खैर, पाठक पढ़ें, समझें और लुत्फ़ लें। अगर कहीं भी उनको मज़ा आया तो कामयाबी अपनी है।

ग़ैर मुतअल्लिक हैं यह बातें कि साहब हम तो उर्दू कम जानते हैं, प्रसाद की भावमयी सुन्दर रचना में यह उर्दू की टाँग मदाख़लत बेजा है या 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुन्बा जोड़ा'। यहाँ जो करना था कर गुज़रे। ज़रा क्रम तो देखिए 'आँसू' की बे सिर पैर रचना में, बारीकियाँ तो देखिए सूझ-बूझ की और हिन्दी का मज़ा उर्दू में और उर्दू का हिन्दी में लीजिये। इस अक्स का ज़रा-सा तो मुलाहिज़ा हो, नाचीज़ की कद्रे-कद्रदानी हो और इस कोशिश की तरफ़ तो ग़ौर हो कि तमद्दुन ख़यालात, साहित्यक समन्वय का यह चरण उचित है कि अनुचित, ज़ेबाँ है या बेजा, ज़माने के साथ है या अलग। हम समझते हैं *'ज़माने की गर्दिश में हम ढल रहे हैं, हमारी सिफ़ारिश ज़माना करेगा'*।

रही बात वर्ड्सवर्थ की पोयम की और चक्कबस्त साहब की "देहरादून की सैर" की। देहरादून वाली रचना के स्वर अक्सर कानों में गूँजते हैं *'यहीं बहार का पहले-पहल हुआ था शिगून, अजीब ख़ित्तयेदिलकश है शहर देहरादून'*। रचना बड़ी रोचक है, पुष्ट है और प्रकृति समागम से ओतप्रोत है। यहाँ अपना परिचय यों है :—*'प्रकृति पुजारी, रचना को अधिकारी, 'निधिनेह' नामधारी रसराजन-सरन है।'* असर कर गई चकबस्त की चुस्त

बलन्दियाँ *'अजल में थी जो फ़िज़ा उसकी यादगार है, नशेवकोह में गहवारए बहार है यह'* *'वही सुनेगा इसे दिलगदाज़ है जिसका'* और *'ये राग वो है जो मिजराब का असीर नहीं'* और बैठ ही तो गया जम कर अनुवाद करने। पता नहीं कहाँ तक पूरा उतरा। 'बालिका और मेमने' की बात तो सादी ज़ुबान में बच्चों के लिये कहनी थी कुछ इशारे देते हुए। उसमें भी छूट से काम लिया जहाँ मौक़ा मिला। *'बूटे सम तारे सब चमकें व्योम मनो नीली धोती'*, *'प्रकृति कार्य सब सोच रहा था बैठा मैं एकान्त'* इत्यादि। इस अनुवाद का भी कुछ रस अपना है। क्यों किया आप सोचिए। उन गुनाहगीरों में चन्दा शुमार मेरा भी हो जाय जिन्होंने सदाक़त में नज़ाकत भर दी, तक़रीर को तहज़ीब दी और दो जुदागान परन्दों को एक जाल में लाने की जुर्रत की। यदि इस प्रयास से राष्ट्र, कला, भाषा तथा भावना का किंचित भी कल्याण हो सका तो वह क्षण सफल ठहरेगा जब तीन चहकते महकते छोटे फूलों का यह नन्हा गुलदस्ता बनने का विचार अन्तर में आया। उन्मुक्त स्पष्टवादिता क्षम्य हो।

रमा निकेतन, आगरा।
११ दिसम्बर, १९५६

रूपनारायण चतुर्वेदी

आँसू—

(रूपनारायण चतुर्वेदी 'निधिनेह')

आँसू—

[लेखक—रूपनारायण चतुर्वेदी, 'निधिनेह' (बेदिल)]

पहले पृष्ठ पर ४ पंक्तियाँ हैं 'जो घनीभूत पीड़ा थी,
मस्तक में स्मृति-सी छाई' इत्यादि

कहते हैं :—मुरक्कब टीस, याद बन आई,
ग़म के आलम में अश्के बीनाई।

'प्रसाद' जी की किताब में एक ख़ाली पृष्ठ पर ऊपर केवल लिखा मिला 'आँसू'। वह पृष्ठ यों भर दिया :—

दिल का नासूर, आँख का पानी,
हयाते हिज्र की गोया बड़ी है नादानी।

अब नीचे काव्यानुवाद (बिम्ब भाव) आरम्भ होता है :—

गमक रही है ज़रा एक तान ग़मगीनी,
घुमड़ रही है घटा आहोज़ारी रस-भीनी।

दिल के साग़र में मये अरग़वाँ जैसी,
बुला रही है कशिशे यार बेज़ुबाँ कैसी ?

दामने कोह बिन है गूँज लौट आई,
दर बदर फिरती हैफ़ बिलखाई।

एक तस्वीर हिलती दामन में,
दिल की फ़र्याद मिलती दामन में।

× × × ×

दिल के दरपन में घर परिन्दे का,
तिल के ख़ेमे में जग दरिन्दे का।

एक मानी में आस्माँ की फुलझड़ियाँ,
विसाले बज़्म की बाक़ी बची हैं कुछ घड़ियाँ।

तपे फ़िराक़ जला ही न दे तने लाग़र,
किया है अश्क सर्द, आह ला हाज़िर।

कहा है आग समुन्दर की है मुहब्बत ही,
कि जिस शराब में प्यासी है आँख की मछली।

न आस्माँ का ख़ज़ाना न आब का ही रहा,
जहाँ निगाह टिके वह जहान ही न रहा।

फफोले फूट चुके आप दिल की सलवट से,
हरे-से ज़ख़्म हुए अब निगह की करवट से।

ख़ुशी फ़ना हुई, कुछ बेख़ुदी का आलम है,
ख़ुदी है सामने आकर खड़ी, यही ग़म है।

तमन्ना जाग पड़ी लेके एक अँगड़ाई,
ख़ुशी है ख़्वाब हुई, दर्द ने जगह पाई।

काकुल की बुल्बुलों को गुले दिल नसीब होता,
सुबह की अंजुमन का बोसा रक़ीब होता।

तुम्हारा खेल खिलाड़ी वो याद आता है,
वो ख़्वाब याद बना फिरता है, सताता है।

हविस मरी है, क़ज़ा है, मगर मैं ज़िन्दा हूँ,
शबाबे मय की मज़ारें हैं, एक बन्दा हूँ।

× × × ×

फ़साना अन्दलीबों का निगह नर्गिस की शर्माई,
सुनी जो दास्ताँ मेरी तो क़ुदरत आँख भर लाई।

मज़ा अब ज़िन्दगी में क्या, उमीदों पर कफ़न डाला;
किसे फ़ुर्सत सुने क़ज़िया, है सेहरा, बे असर नाला।

जटा फ़क़ीर की उलझन हयात बन आई,
जिगर की ख़ाक फ़क़ीरी बदन ने लिपटाई।

फैल कर दर्द छुपा दिल के एक गोशे में,
अब्र बन फूट पड़ा ग़म के एक बोसे में।

मेरे नालों की बीन सुनते हो,
अश्क के तार प्यार बुनते हो!
प्यार के तार में उमीदें हैं,
दीद तमहीद सुर्ख़ ईदें हैं।

कलेजा थाम के नालों ने मेरे हिचकी ली,
बदल के रुख़, गए सो, मूँद आँख मिचकीली।

उसी निगाह का क़तरा मिले, मैं लहराया,
खिंचे सितार का हर तार-तार सुर लाया।

मगर नसीब हुआ कोहे अब्र तूफ़ानी;
यही ग़रीब की दुनिया में मौत अनजानी।

चढ़ी घटा है नशेमन मेरा डुबोने को,
फ़ना है रोशनी, सूरज की शान खोने को।

तभी क़रीब के जल्वे से बेनक़ाब आए,
झिझक निगाह उठी जब ज़रा-सा मुसकाए।

मेरे ईमान-मेरी जाँ तुम हो,
मेरे अर्मान औ' ज़ुबां तुम हो।

तुमको पाने को चादरें बोलीं,
मिन्नतें माँग आँख थीं रोलीं।

मुराद मिलने लगी आगए तराने से,
मगर मैं, ख़ूब! गया रूठ ऐसे गाने से।

खिली थी चाँदनी पहले नज़र जो तुम आए,
मगर अज़ीज़ थे, पहले से, यूँ नज़र आए।

लहर बहर से मिले चाँदनी बताए बिन,
लहर उठे है गले भेटने बताए बिन।

वही निगाह घड़ी वोही याद आती है,
मेरे नसीब को शायर-सा बना जाती है।

रवाँ नहीं है, अरे, आबशार सब्ज़े में,
चली है आज हक़ीक़त जज़ा के क़ब्ज़े में।

सहारा एक नहीं, मैं ख़िज़ाँ से घबराया,
मशल बहार से कोंपल को तूने लहकाया।

बड़े हसीन हो झीनी नक़ाब के हामी,
मेरे शबाब में, अन्दाज़ लाए यज़दानी।

अब्र में बिजिलियाँ, बिजली में चमक-से आए,
तूर का नूर लिए तिल में तजल्ली लाए।

आज मूरत में जान-सी आई,
लाख सूरत में एक शैदाई।
उसकी टेहनी का एक परन्द हूँ मैं,
मैकदे-भर में एक रिन्द हूं मैं।

शबाब हुस्न के घेरे में बँध गया कैसा?
परन्द इश्क़ के डेरे में सध गया कैसा?
इसी ज़मीन पै आशिक़ निसार होते हैं,
तुयूर तिल की तरावत में कैसे सोते हैं।

× × × ×

नागिन बढ़ी हैं पीने लबरेज़ यह कटोरा,
हीरों से मुँह भरे हैं, माही करें हैं फेरा।

लाली शबाब हल्क़े काली-सी पुत्लियों में,
नीलम पिन्हा दिए हैं, इन लाल उँगलियों में।

सुरमई आब में तिरती
है नाव सफ़ेदी मायल।
फ़र्यादी है घेरे में
जज के आगे है सायल।

बढ़ो बरौनियां तस्वीर बनाने के लिए,
गोया उम्मीद चली मुर्दे जिलाने के लिए।

खुला वो गाल पर हँसने में पड़ गया देखो,
जबीं कमान में नज़रों के तीर वह देखो।

मोती अनारदाने मूँगे की मछलियों में,
तोते न हंस आते फँसने को तीलियों में।

आबेरवाँ का दामन, भरकर कमल की झोली;
सीमाब तैरता था, इठलाके बाँह तोली।

महताब के किनारे,
क्या खूब दो सितारे।
मोती टपक रहे हैं,
जिनसे खुशी के मारे।

लहर उठा के अजब जो ज़रा ली अँगड़ाई,
कमान बाँह की नीचे को आके शरमाई।

बिजली की कौंध देखी उस नाज़नी-बदन में,
जैसे नसीम धोई हो चाँदनी सहन में।

ख़्वाब की बात वाक़या जाना, हुस्ने अन्दाज़ मुस्तक़िल माना।
जुस्तजू की जगी तमन्ना है, कौन-सी सिम्त मोती-पन्ना है।

ख़ुदा वो ज़ात थी बुनियाद बेपनाही की,
न कुछ वुजूद था उसकी ही पारसाई की।

काकुल नहीं ये ज़िन्दगी के जाल हैं मेरे,
अग़यार बादानोश चश्म लाल हैं मेरे।

न समझे जभी हँसदी मेरी सदाक़त,
सुकूँ सब्ज़पोशी पै तरसी लियाक़त।
वो उल्झन बढ़ाती बला की बलाग़त,
ख़ुशी रुक गई, रूठ बैठी रियासत।

× × × ×

इशारे नर्गिसों के बेल की गलबाँह देखो तो,
लबे गुल पर उमड़ती अंदलीबी छाँह देखो तो।

तरन्नुम कौन-सा जारी गुलों की मुस्कराहट में,
छिपे हैं तार सरगम के सबा की नन्हीं करवट में।

आग़ोशे मोहब्बत मय, हर साँस है शहनाई,
मेहताब की मेहफ़िल में सोती मेरी तनहाई।

चाँद दिल में थकी सुकूँ की रात,
आबशारों की चर्ख़ में इफ़रात।

क्या कभी फिर विसाल की घड़ियाँ,
ख़्वाब में बन सकेंगी फुलझड़ियाँ।

आग पानी में मय हविस न दूर हुई,
तड़प न दफ़्न हुई, प्याली चूर-चूर हुई।

ख़्वाब टूटा सितारा डूब गया,
इश्क़ मायूस हाय ऊब गया !

ज़िन्दगी हो गई ख़ुराके दवा,
कैसा काबा व कौन-सा उक़बा !

तुम्हारी सूरतें गुमराह हमको करती हैं,
सितम है, नाज़ में कितने गुनाह भरती हैं ।

याद उस ख़्वाब को तरसती है,
अब तो रहमत फ़क़त बरसती है।

मेरे वीराँ में गूँजती है सदा,
नाज़, फ़र्याद, याद हो के जुदा।

भूल जाता हूँ, कुछ नशा छाया,
'मैं अकेला हूँ', ये ही सरमाया ।

माती हमारे मन का पानी बना बहे है,
पानी में आग लगकर दिल की बुझी कहे है।

लहद के फूल चुराते हैं आँख ग़ुंचों से,
ख़मोशी शाम, हक़ीक़त लुटी तमंचों से।

जिगर का मोम शमादाने आब बना,
वायज़ा जाँनमाज़ पर सराब बना।

भूल का फूल रेत में न खिला,
धूल का यह ग़ुबार धूल में न मिला।

भौंरे कमल के अन्दर ख़ामोश हैं हवाएँ,
बहते कशिश के दरिया आहोफ़ुग़ां सदाएँ।

मैं वो ग़ुंचा खिला-खिला न खिला,
धूल में फूल मिला, किसको गिला।

एक बेकस सदा मज़ार के पास,
तिलमिलाती है सब्ज़ाज़ार के पास।

रुख़सारे मग़रिबी की हविस कैसे लुट गई;
मैं सो गया सुबह को, लगी आँख छुट गई।

हूँ सुबह का सितारा,
मोती नहीं हूँ पारा।
बादल बना बेचारा,
फिरता हूँ मारा-मारा।

ज़हर नज़र है बनी आज आँख का सुरमा;
इश्क़ की लौज़, हुस्न का ख़ुरमा।

मेरी नीलम हुबाबे दरिआई,
मेरी मंज़िल तमाम बर आई;
मेरे गोशे की सब्ज़ तनहाई,
चाँद बनकर फिरे है शरमाई।

छुपे-छुपे ही इशारे किया करो प्यारे,
तुम्हारे हुस्न के शैदा शरीक़ नज़्ज़ारे।

शबाब बनके चढ़े, ढल गये जवानी से,
नशे की शक्ल में आए, गए थे पानी से।

बिजली चमक गई है मेरे दिल वसीअ में,
नश्तर दवा बना दिया चिल्मन मसीह ने।

× × × ×

वो याद झूमती-सी बड़े नाज़ से उमड़ आई,
मेरी ख़ुशी की कली जिस्के रस से मुस्काई।

चाँद बरसा रहा है ठंडाई,
मोतियों की लड़ी गले आई।
दिल के बादल की बज़्मे आराई,
देख झुकती-सी शाम, भर आई।

दामन तुम्हारा छूकर आती नसीमे सहरी,
झटका-सा खा के रोता, भर-भर के आह गहरी।

आराम कर रही है सबा चाँद के तले,
बिस्मिल का इन्तज़ार मुझे, हाथ यूँ मले।

पर्दे में छुप गए हो दग़ा दे के इस तरह,
काटें ग़मेफ़िराक़ की रातें ये किस तरह।

× × × ×

सोने की जालियों में, वस्ले शाम कट गई,
हम जान भी न पाये, सियह रात कट गई।

उसी ख़ुमार में मामूर दिले रिन्द रहा,
न अश्क धो सके वह नक़्श आज आयन्दा।

वही तस्वीर हुस्न लबरेज़ी
दिल के मैदाँ में करती रँगरेज़ी
म्यान से निकली पैनी चंगेज़ी
ख़ूबसूरत कमान ले तेज़ी।

रहबर बने शमा लिए जिस राह के कभी,
शोलाफ़गन बने शजर उस राह के सभी।

सितार-तार तरस खा के खिंच गए इतने,
हक़ीर दिल की हविस के ग़ुबार हों जितने।

मेरी आरज़ू की शराबों को पीकर,
मेरी जुस्तजू की किताबों को सीकर।
मुझी को ग़ज़ब आँख दिखलाने वाले,
न समझी है सोज़िश, न देखे हैं नाले।

सय्यार ला खड़ा किया इस नाव से कहाँ,
वहदत की दास्ताँ है रवाँ हर तरफ़ जहाँ।

तारीकियों का दामन मुझको बुला रहा है,
ग़मगीनियों का आलम झूले झुला रहा है।

गर्दिश ने खोदिए हैं सहारे उमीद के,
अश्के जिगर सदर हैं किनारे तमहीद के।

सैलाब बेख़ुदी का, सिपहे नाख़ुदा खड़ी,
कश्ती हनोज़ दूर समुन्दर में जा पड़ी।

फिर भी अयाँ है मंज़िले मक़सूद मेरी जाँ,
बख्शी है चश्मे लाग़री को तुमने क्या ज़ुबाँ।

डोरी कशिश की खींचती अश्कों की ग़ार में,
इस कश्तिये जिगर को ग़ुबारों के ग़ार में।

हविस वो कौन लगाती जो आग पानी में,
ज़हर-बुझी है गोया नफ़्स इस रवानी में।

तुम्हारी छाँह की, राहों के सद्क़े आह लिए,
चली है चाँद की मंज़िल नक़ाब पोश किए।

ज़र्रे में नुमायाँ कभी बादे सबा के साथ,
गर्दिश के मुक़ाबिल कभी महशर का थाम हाथ।
आते चले अन्दाज़ से सैलाब दबाए,
कोशिश को हिकायत की तजल्ली में छुपाए।

मेरी इन ख़ूबियों के तुम वाली,
मुश्ते ग़ैरत ने एक शक्ल पाली।

तुम्हारी सर्द सिफ़त फिर तपिश के क्या मानी,
ज़हर का जाम भी आबेहयात इफ़ानी।

चकोर आग, शमा का रक़ीब परवाना,
मिटे ख़ुदी कि मयस्सर है दीदे जानाना।

गुलचीं के गुल न रात के तारे हो मेरे चाँद,
तुम तो हयाते इश्क़ नज़ारे हो मेरे चाँद।

वो ग़ुंचे गुल बने थे बाग़बाँ ने चुन लिए,
उल्फ़त चमन न पाई, मरे, अपनी धुन लिए।

लुत्फ़, डाली पै झूम कर खिल जायँ,
डाल से आप गिर के धूल में मिल जायँ।

तुम्हारे क़दमों में वह फूल चढ़ाने आए,
हमारे फूल कि क़दमों तले ही मुस्काए।

पड़ी रहेगी कहानी यूं ज़िन्दगानी की,
किताबे वक़्त में हँसने की चश्मे पानी की।

ये नाग ज़माने का चला झूमता बड़ा,
मुड़ कर न जिस्ने देखा कभी कौन क्यूं खड़ा।

इन्सा हयात रात-वस्ल ग़म ख़ुशी का हो,
चश्मो जिगर का खेल बड़ी ख़ामुशी का हो।

× × × ×

गहराइयों से ज़िन्दगी की ख़ुर्रमी को पी,
चलते बने, न सोचा ज़रा, किसका दुखता जी।

सुबू को ग़म की छलक चश्मे तर जो फूलों में,
वही ख़ुशी है सरेशाम अब्र भूलों में।

दिल में मामूर ग़म ख़ुशी ऐसी,
सब्जज़ारों में धूप-छाँह जैसी।

आबे फ़लक की मौजें इज़हार हैं ख़ुशी के,
तारों की छाँह फैली उस पार है ख़ुशी के।

पर यह ज़मीन बेकस दुख-दर्द को छुपाये,
रहमत की आरज़ू ले, दामन फटा बिछाए।

माँगे है अश्क खारी, ख़ुशियाँ दे आस्माँ को,
मैं जो फ़क़त तुम्हारा, क्या दूँ कहो जहाँ को।

तसल्ली पाके ख़ुशी सिम्टी है पिटारे में,
नहीं समा जो सकी चर्ख़ के नज़ारे में।

लिहाज़ करते ज़रा मेरी इस मुहब्बत का,
असीरे ख़्वाब में ले आते जोश रग़बत का।

कमी कौन-सी थी न जाना कभी था,
तुम्हारे बिना हक़ न माना कभी था।

तुम्हारे बिना मौत भी तो न आई,
मेरी जाँ के मालिक तुम्हारी दोहाई।

शजर शाख़ हिलती तुम्हीं नाचते हो,
मैं रोता हूँ अश्कों में तुम दीखते हो।

यही जी में आता ख़ुशी ग़म गले मिल,
मुहब्बत के पर्दे में हो जाय एक दिल।

तभी ग़ुन्चे क़िस्मत के सिन की सदा में,
सदाक़त लुटा दें जिगर की अदा में।

तजल्ली तुम्हारी पै क़ुर्बान बेदिल,
ये दुखती-सी दुनिया तुम्हीं से है हासिल।

मेरी शराब हलक़ पार कर चुकी साक़ी,
मेरे मज़ार में उनकी सदा फ़क़त बाक़ी।

× × × ×

मुझे यक़ीं है मेरे यार खिंच के आओगे,
हिला लबों को ज़रा चश्मे तर बहाओगे।

अजब उमीद लिए शाम का तराना है,
सुबू न याद रहा, आह कैसा गाना है।

× × × ×

राहत मिली न ज़िन्दगी डाले फिरी नक़ाब,
दामन फटा, गिला नहीं, पूरा हुआ न ख़्वाब।

आराम सो रहा यहाँ आहें बिछा-बिछा,
कामिल न ख़्वाब जो हुआ, फिरता खिंचा-खिंचा।

फिर भी सदक़े लिए सुकूं सोया,
इश्क़े सय्याद ज़ार-ज़ार रोया।

हमने माना कि तुम हो ख़्वाब के भी पार,
फिर भी तुम में कशिश कि मैं बेज़ार।

तभी चाहते ख़्वाब बन कर सितारे,
फ़लक फूल से भर दें गंगा किनारे।

नुकीली नज़र तीर तासीर नीली,
कमानें भुलावे के भीलों की गीली।

ज़मीं माँगती है जबीं की तजल्ली,
इसी नील नागन से पाती तसल्ली।

लहद पर खिले फूल ज़िन्दा दिली के,
कि सो जाय शबनम लबों पर ख़ुशी के।

याद की रात ग़म गुज़र जाए,
वस्ले पैग़ाम फ़स्ल भर लाए।

× × × ×

रात रोई वुजूद बूँद हुआ,
इस तरह इश्क़ लुत्फ़ सूद हुआ।

मेरी ख़ुशी को देख के क़िस्मत न तू हँसे,
मैं तो असीरे इश्क़; अरे, तू न यूँ फँसे।

'छोटी-सी ज़िन्दगी में भरी आब रह गई'—
बुझते हुए चराग़ की लौ ऐसा कह गई।

आँसू हँसी मिले तो नया रुख़ ले ज़िन्दगी,
इन्सान की कलियों में खिले खुल के ज़िन्दगी।

ज़र्रे की ज़ुल्मतों पै नया रंग चढ़ गया,
कहने को बात रह गई—'ज़र्रा किधर गया'।

× × × ×

चाँद थक कर फ़लक पै सो जाता,
डूब सूरज है शाम को जाता।

अब्र दरिया में न्हा चुकें तारे,
बिज्लियाँ बन्द करतीं नज़्ज़ारे।

एक जल्ती मशाल हविस की हो,
टीस निकले, नज़र तपिश की हो।

कर रहीं सिजदा चाँद की लड़ियाँ,
बढ़ रहीं फिर फ़िराक की घड़ियाँ।

कोहे तूफ़ाँ उठे समुन्दर में,
आग लिप्टी हो चर्ख़े चादर में।

सर पै बरपा हो जब फ़ना की रात,
और देती हो बेख़ुदी सौग़ात।

तभी कोह शोलाफ़ुगन ले बलाएँ,
जिगर की जलन के मगन गीत गाएँ।

मेरे दिल की आतिश तू जलती अकेली,
कि पर तोल उतरी परी की पहेली।

ख़िज़ाँ जहान के अर्मान जलते होली में,
इधर सुहाग के फ़र्मान पलते झोली में।

यही चाहते तुम बहर आग बन कर,
लहर का जिगर चीर तल्वार बन कर।

करो ख़ाक पामाल ईमान सारा,
दिखा दो फ़लक को अनलहक़ इशारा।

मेरी आरज़ू की ऐ छोटी पहेली,
किधर जारही तू अकेली-अकेली।

कि दुनिया की उल्झन में तेरी अदा है,
मेरे जोशे ईमाँ की लौ में सदा है।

प्रेम की पीर तीर तूफ़ानी,
ज़र्रा नाचीज़ हर्फ़ का पानी।

मुझ को ख़िल्वत में मिल गया बोसा,
ताजिरी तूर जल्वा फ़र्रोशा।

पता दिल का देती हैं धुँधली निगाहें,
बिला नम हुए, सर्द पैग़ाम लाएँ।

फ़लक को यही सिल्सिला दे बलन्दी,
इसी आग में ज़िन्दा मेंहदी व बिन्दी।

× × × ×

जिसके शहीद दामन में हक़ विक़ार होता,
ज़िन्दादिली बलाग़त, ग़ैरत से प्यार होता।

उस तख़्ते अकबरी का कैसे शुमार होता,
उक़बा फ़रार होता काबा निसार होता।

बदल करवटें इश्क़ मेरा जगेगा,
तरन्नुम भरेगा, गले से लगेगा।

अश्क सूखें ज़रा हिलें रुख़सार,
तिफ़्ले तबियत से यूं मिलें रुख़सार।

जैसे हो डूबते को इक तिनका,
जिससे ज़िन्दा हो ख़्वाब फिर उनका।

दिले नादाँ नसीमे सेहरी में,
उनके तिफ़्लाने तर्ज़े बेहरी में।
शायरी कुल कलाम को खोले,
अन्दलीबी ज़बान कुछ बोले।

उधर नील की चादरें हों नशीली,
इधर सब्ज़ मिट्टी हो पुरलुत्फ़ गीली।

कि दोनों में धड़कन समाई हुई हो,
निगह को गोया शर्म आई हुई हो।

मैकदे जाम आस्माँ के भरें,
लबे अंगूर हुस्ने हूर भरें।

दूर झगड़े हों तूरे नूरानी,
हुस्ने हिन्दी व तेग़े तूरानी।

मुझे नसीब हो मेरा रक़ीब नज़्ज़ारा
फ़लक़ ज़मीन वही वह सुबह का यकतारा

गर्दिश के झंझटों में सुबह-शाम ठहर जाय,
बिस्मिल की निगह हिलके लबेबाम ठहर जाय।

ग़ुरूर दूर हुआ हुस्न की तबीयत का,
सुरूर दूर हुआ तिफ़्ल की नसीहत का,

मिली है ताज़गी तूफ़ाँ की इन्तहाई में,
अजब बहार का पानी है पारसाई में।

इबादतों की है लत इश्क़ में पुरानी-सी,
महल कमल की नशीली निगाह जानी-सी।

याद फ़र्याद शक्ल लेती है,
ज़िन्दगी ख़ुशगवार खेती है,

कट गई फ़स्ल, बो लिया मौसम,
मौजे ख़िरमन में, हमको किसका ग़म।

मेरी लाग़री में भरी सब्ज़ उल्फ़त,
मेरे जामे मय से छलकती मुहब्बत।

तराने हमारे घराने की दौलत,
तुम्हें औ' हमें साथ चलने की आदत।

× × × ×

हिज्र के वे ज़माने बीत गए,
ज़मीं से ऊँचे उठे ज़िन्दगी से जीत गए,

नशे की बात ज़माने की रात ने पीली,
गई वो रात सितारों-भरी-सी चमकीली।

अब तो रहमत है आक़बत के लिए,
रब का है शुक्र मारफ़त के लिए।

फिर भी ताबे है शोख़ अश्क के दरिया,
रहनुमा इबरतों के सद दरिया।

सींचे गए कनारे,
आँसू के ले हज़ारे।
गुलशन ख़ुशी के मारे,
तालिब बने तुम्हारे।

चाँदनी की किरन का ले झूला,
प्यार, उतरे हो, मैं तो ग़म भूला।

कैसी शफ़क़त की चाँदनी फैली,
पाक चाँदी की दिल की सिल मैली।

आज सीमाब सीप में ढल कर,
सर्द दरिया के दर्द में पल कर।

गा रहा गीत किस ख़ुशी के साथ,
गोया देखी न इसने ग़म की रात।

तुम्हीं तो हँस रहे तारीकियों के गोशे में,
निखर रहे हो हरे होके सब्ज़ ख़ोशे में।

हँस रहे फूल इसके क्या मानी ?
दर्द मेरा क़बूल लासानी।

आज आग़ोश फैलता-सा है,
क़ब्ज़ए होश कुछ ख़ता-सा है।

मेरी ज़िन्दगी के नसीमे बहारी,
मेरे मैकदे के शुमारी-ख़ुमारी।

मेरे साथ झूमे, मेरे साथ रो लो,
मैं नग़मे सुनाता मेरे साथ हो लो।

गुनाह धुल के शराफ़त-लिबास लेते हैं,
परन्द ग़म के ख़ुशी का पयाम देते हैं।

तुम्हारे ताब के पानी में धुल गए गुमराह,
गुनाहगीरों के सर से गई सज़ा की आह।

× × × ×

ज़मीन सोती पड़ी ख़्वाबेशान तनहाई,
नक़ाब डाल के सूरत वो कौन बन आई ?

अरे ! अज़ीज़ मेरे दिल के दर्द आते हैं,
नक़ाब डाल इशारों से यूँ बुलाते हैं ।

न भूलो मुझे मैं तुम्हारो सदा हूँ,
मैं रहबर ख़ुशी का, मैं ख़ल्क़े ख़ुदा हूँ ।

जो मेरे हो तुम तो मुझे यह बता दो,
ज़माने के नक्शेक़दम क्या, जता दो ।

कभी देख पाया न ऐसा नज़ारा,
कि ख़ुशबख़्त इन्सान फिरता हो मारा ।

ख़ुशी की लहद पर पड़ी ग़म की चादर,
सितारे फ़लक के हों भाई-बिरादर ।

ठहर कर कभी देखे दिल के फफोले,
कभी हाशियों के थे सदमे टटोले ।

हविस अजगरों की कभी देख पाते,
जो साँसों के दामन में आहू चुराते ।

आतिशफ़िशां हैं कोह खड़े मुँह सिए-सिए,
सब्ज़े बहार सब्ज़, जाम मौत का पिए ।

वे कोह कि जिन पर न कभी घास उगी हो,
जिनमें न कभी रग़बते इन्सान जगी हो ।

वह सब्ज़े बहारी जो ख़िज़ाँ में पली कभी,
वह धान की जाजम जहाँ क़ैंची चली अभी।

देखा ग़ुंचों को मुख़ातिब-सा फ़साना सुनते,
देखा भौंरों को कपट जाल का बाना बुनते।

देखीं नाकामियाँ, नर्गिस की निगाहें सूखी,
लुत्फ़े माशूक़ तड़प देखी जज़्बा की भूखी।

तुमने क्या देखे हैं दरिया के कनारे गिरते ?
आब और ख़ाक के पुतलों की मज़ारें तिरते।

देख ली शामेशमा वस्ल की रुसवाई में,
देख लो उनकी इबादत लवे तनहाई में।

आज फिर से वो बीन बजती है,
अश्क रस ले घटा गरजती है।

अश्के अंदाज़ के तिलिस्मी ख़्वाब,
बहरे 'बेदिल' बने तेरा सैलाब।

THE QUIET LIFE

(By—A. Pope)

आत्मतोष

(अनुवादक—'निधिनेह')

THE PET LAMB

(By—William Wordsworth)

मेमना और बालिका

(अनुवादक—'निधिनेह')

The Quiet Life.

(By—A. Pope)

Happy the man, whose wish and care,
A few paternal acres bound.

Content to breathe his native air,
In his own ground.

Whose herds with milk, whose fields with bread,
Whose flocks supply him with attire,

Whose trees in summer yield him shade,
In winter fire.

Blest, who can unconcern'dly find
Hours, days and years slide soft away.

In health of body, peace of mind,
Quiet by day.

Sound sleep by night; study and ease,
Together mix'd sweet recreation,

And innocence, which most does please
With meditation.

Thus let me live, unseen, unknown ;
Thus unlamented let me die.

Steal from the world, and not a stone
Tell where I lie.

आत्मतोष

(अनुवादक—'निधिनेह')

ते जन जग में लहत सुख, जिनको सब आधार,
है कृषि-सेवा पै निरत, जो जग-जीवन-सार।

स्वच्छ वायु सेवन करत, रहत सदा स्वच्छन्द,
तज माया छल-छिद्र कौं, लहत अमित आनन्द।

निज पशु-पय पीवो करैं, कृषि-फल भोजन खांय,
निज भेड़न की ऊन के, जिन तन वस्त्र सुहांय।

निज रूखन की छाँह में, ग्रीषम देत बिताय,
ईंधन तिन तरु शीत में, राखत देह तपाय।

जिनके कोमल चित्त में, चिन्ता कौ न निवास,
दिवस मास बीतत रहत, सहित उछाह-हुलास।

सुन्दर स्वस्थ शरीर सौं, लहैं मानसिक शान्ति,
हृदय-पयोनिधि में कबौं, उठै न जिनके क्रान्ति।

सुख सौं सोवैं रैनि में, बासर करैं अनन्द,
ध्यान धरैं हरि प्रात में, दूरि रहैं दुख द्वन्द।

× × × ×

ऐसे सुजन समाज में, प्रभु करिओ उत्पन्न,
परमारथ में ह्वै निरत, करौं स्वार्थ, मद, छिन्न।

हे प्रभु ! है यह विनय मम, मोकों राखौ गोय,
मेरे जीवन अन्त सौं, दुख ना जग कौं होय।

जग का यौं अविदित रहौं, पंच भूत के माहिं,
जिमि अन्तर व्यापक रहै, जगदीश्वर की छाहिं।

The Pet-Lamb.

(By—William Wordsworth)

The due was falling fast, the stars began to blink ;
I heard a voice; it said, "Drink, pretty creature, drink !"
And, looking o'er the hedge, before me I espied
A snow-white mountain-lamb with a Maiden at its side.
Nor sheep nor kine were near ; the lamb was all alone,
And by a slender cord was tethered to a stone ;
With one knee on the grass did the little maiden kneel,
While to that mountain-lamb she gave its evening meal,
The lamb, while from her hand he thus his supper took,
Seemed to feast with head and ears ; and his tail with
pleasure shook.
"Drink, pretty creature, drink," she said in such a tone
That I almost received her heart into my own.
'T was little Barbara Lewthwaite, a child of beauty rare!
I watched them with delight, they were a lovely pair.
Now with her empty can the maiden turned away:
But ere ten yards were gone her foot-steps did she stay.
Right towards the lamb she looked; and from a shady
place
I unobserved could see the workings of her face :
If nature to her tongue could measured numbers bring,

मेमना और बालिका

(अनुवादक—'निधिनेह')

हरी घास पर ओस पड़े ज्यों मखमल पर सुन्दर मोती,
बूँटे सम तारे सब चमकें व्योम मनो नीली धोती।
प्रकृति कार्य कुछ सोच रहा था बैठा-बैठा मैं एकान्त,
शब्द एक सुन चौंक पड़ा मैं वाणी थी या मेरी भ्रान्ति।
"प्यारे बच्चे ले यह पीले" इतना ही बस सुन पाया,
आँखें मेरी लगी दौड़ने सोचा किसने बहकाया।
मन-पक्षी तब छूट गया मम, लगा खोजने वह चहुं ओर,
भ्रान्ति नहीं वह सत्य-मूर्ति थी, था वह ही पर मम मन चोर।
क्षीर समान मेमना सुन्दर देख पड़ा मुझको आगे,
एक बालिका खड़ी हुई थी, उसे प्रेम-रस में पागे।
और भेड़ उसके न पास थी देव-मूर्ति वह बच्चा था,
एक ओर मन सधा हुआ वह सुदृढ़ प्रेम में सच्चा था।
कोमल पतली-सी डोरी से पत्थर में वह बँधा हुआ,
मानो मानस-हंस प्रेम-डोरी से होवे सधा हुआ।
घुटनों के बल बैठ बालिका खाना उसे खिलाती थी,
अमित प्रेम से चूम-चूम मुख मातृ-प्रेम दरसाती थी।
अरे मेमना ! भोजन करते कितना मोद मनाता था,
कर्ण-शीष को घास बीच कर सुख से पूँछ हिलाता था।

Thus, thought I, to her lamb that little Maid might sing;
"What ails thee, young One ? What ? Why pull so at thy cord ?
Is it not well with thee ? well both for bed and board ?
Thy plot of grass is soft, and green as grass can be ;
Rest, little young One, rest ; what is 't that aileth thee ?
What is it thou wouldst seek ? What is wanting to thy heart ?
Thy limbs are they not strong ? And beautiful thou art;
This grass is tender grass; these flowers they have no peers ;
And that green corn all day is rustling in thy ears !
If the sun be shining hot, do but stretch thy woollen chain
This beech is standing by, its covert thou canst gain ;
For rain and mountain-storms ! the like thou need'st not fear,
The rain and storm are things that scarcely can come here.
Rest, little young One, rest ; thou hast forgot the day
When my father found thee first in places far away ;
Many flocks were on the hills, but thou wert owned by none,
And thy mother from thy side for ever-more was gone.
He took thee in his arms, and in pity brought thee home ;

"प्यारे बच्चे, ले यह पीले" वाणी थी, या था यह राग,
मन में मेरे लगी सुलगने अद्भुत एक प्रेम की आग।
वह मृणालिनी परम सुन्दरी कोमल-सी शशि-बाला थी,
सुखद योग ऐसा दोनों का सागर पर घन-माला थी।
अभी जारही रीता लेकर पात्र, छोड़ उस छौने को,
कुछ पग चले चपल आगे, मानो फिर निज गति खोने को।
छाया में वह रुकी-मुड़ी, बच्चे में फिर दी दृष्टि गढ़ा,
मुख पर आते-जाते भावों को छिप मैंने खूब पढ़ा।
प्रकृति-परी यदि उसकी वाणी-वीणा को स्वर दे जाती,
तो निश्चय मैं कह सकता था वह बच्चे में यों गाती।
"छोटे जीवन तुझको दुख क्या ? पतली डोरी खींचे है,
बैठ शीत में सोजा प्यारे, निदिया आ दृग मींचे है।
सुखद घास का हरा बिछौना, सुन्दर सोने-खाने को,
सो ले, बच्चे, सो ले, प्यारे ! तुझ पर आँच न आने को।
ढूँढ रहा तेरा मन किसको, किसके प्रति अनुराग प्रबल,
कैसा सुन्दर तेरा तन है, रोम-युक्त सब अंग सबल।
घासों की कोमल तृण-शैय्या, फूलों में भी शूल नहीं,
लहरातीं धानों की बालें क्या कहतीं यह भूल नहीं।
यदि सूरज की चमक घनी हो, ऊन युक्त तू तन फैला,
सोजा नदी किनारे प्यारे, क्यों करता है मन मैला।
आँधी पानी से तू मत डर, बाधा तुझे न आवेगी,
कोई आधि-व्याधि इस थल पर तुझको नहीं सतावेगी।

A blessed day for thee! then whither wouldst thou roam?
A faithful nurse thou hast; the dam that did thee yean
Upon the mountain tops no kinder could have been.
Thou know'st that twice a day I have brought thee in this can
Fresh water from the brook, as clear as ever ran;
And twice in the day, when the ground is wet with dew,
I bring thee draughts of milk, warm milk it is and new.
Thy limbs will shortly be twice as stout as they are now,
Then I'll yoke thee to my cart like a pony in the plough;
My playmate thou shalt be; and when the wind is cold
Our hearth shall be thy bed, our house shall be thy fold.
It will not, will not rest:—Poor creature, can it be
That 'tis thy mother's heart which is working so in thee?
Things that I know not of belike to thee are dear,
And dreams of things which thou canst neither see nor hear.
Alas, the mountain-tops that look so green and fair!
I've heard of fearful winds and darkness that come there,
The little brooks that seem all pastime and all play,

सोजा एरे ! सोजा मेरे ! तुझको क्या वह याद दिवस,
पिता उठा लाया जब तुझको बड़ी दूर से हुआ विवश।
गिरि पर भेड़ें कितनी सारी पर तेरी माँ एक न थी,
रखवाला तेरा न कोई था, तेरी कोई टेक न थी।
दया-भरा गोदी में लेकर पिता चला ही आया था,
ना जाने तू कहाँ भटकता, यही सोच ले आया था।
स्वयम् सेविका सच्ची तेरी सेवा में तत्पर घाटी,
गिरि-शिखरों पर स्वजन न कोई जिसने तनिक पीर बाँटी।
तुझे विदित है तेरे हित नित पात्र भरूँ यह मैं दो वार,
स्वच्छ सलिल से जो बहता रहता नीचे बन कर रस-धार।
दो ही बार तथा तेरे हित ओस भीगती धरती देख,
ले आती हूँ गरम दूध नव, नवल दूध तन में दे सेक।
कुछ दिन बीते द्विगुणित बल भर सबल अंग होंगे तेरे,
गाड़ी में जोड़ूँगी ऐसे ज्यों टट्टू देता फेरे।
सखा, मित्र सब कुछ तू मेरा, चल निकले जब शीत बयार,
हृदय, सेज पर तुझे सुलाऊँ बन्द करूँ गृह के सब द्वार।
पर, काहे को तू मानेगा, छोटे जीव तुझे कब चैन,
तुझको निज माँ हृदय मिला है, वह गति ही तुझको सुख दैन।
मैं भय खाती जिन विपदाओं से वह तो तुझको प्रिय हैं।
सुने न देखे जो सपने हैं बस जाते तेरे हिय हैं।
हाय, गिरि-शिखर सुखकर दिखते जो नितप्रति हैं हरे-हरे,
उन पर आँधी का क्रम देखा तथा कालिमा घिरे-घिरे।

When they are angry, roar like lions for their prey.
Here thou need'st not dread the raven in the sky;
Night and day thou art safe,—our cottage is hard by.
Why bleat so after me ? Why pull so at thy chain ?
Sleep—and at break of day I will come to thee again !"
—As homeward through the lane I went with lazy feet.
This song to myself did I oftentimes repeat ;
And it seemed, as I retraced the ballad line by line,
That but half of it was hers, and one half of it was *mine*.
Again, and once again, did I repeat the song,
"Nay," said I "more than half to the damsel must
belong,
For she looked with such a look, and she spake with
such a tone,
That I almost received her heart into my own."

छोटी-सी सरिता जो लगती भली-भली भोली-भाली,
हो क्रोधित गर्जे सिंहिनि-सी लख शिकार हो मतवाली।
मत भय कर तू यहाँ गिद्ध का जो अति तीव्र गगन-गामी,
तू है सदा सुरक्षित प्यारे, है कुटिया समीप ग्रामी।
'बें-बें' करता मेरे पीछे क्यों डोरी को खींचे है?
मैं आऊँगी सूरज निकले, अब क्यों आँख न मींचे है"
थके पाँव मैं चला गली में मतवाला-सा निज घर ओर,
वही गान की तान प्रान में चुभ जाती बन मृदुल हिलोर।
जैसे मैं चलता जाता था तैसे गायन की ध्वनि भी,
आधी उसमें, आधी मुझ में, समा रही सुख पावन-सी।
फिर-फिर मैं दुहराने लगता, गायन की कोमल कड़ियाँ,
अर्ध भाग से अधिक दिए देता बाला को मैं लड़ियाँ।
उसकी चितवन में टोना था, कण्ठ-स्वर में वह संगीत,
हृदय-हार मनुहार बन गई बाला, वाणी, पावन प्रीति।

देहरादून-दर्शन—

(श्री रूपनारायण चतुर्वेदी 'निधिनेह')

"देहरादून-दर्शन"

श्रीयुत पण्डित ब्रजनारायण चकबस्त रचित 'देहरादून की सैर' शीर्षक कविता का हिन्दी अनुवाद।

अनुवादक—रूपनारायण चतुर्वेदी, 'निधिनेह'।

शुभ शकुन श्री ऋतुराज का सर्व-प्रथम जिस ठौर था,
वह नगर देहरादून मनहर भूमि पर शिरमौर था।
सुख-चाव के चख युग्म ने क्या दृश्य देखा था वहाँ ?
नव भूमि, नूतन वर्ण युत आकाश देखा था वहाँ।
श्री नन्द-नन्दन वन-विनिन्दक श्रवण से इसको सुना,
यदि स्वर्ग भूधर शृङ्ग तिनकी, गैल था इसको गुना।
यह सृष्टि-उत्पति पूर्व सुख का एक ही स्मृति रूप है,
गिरि-अंक में, ऋतुराज का प्रिय पालना, अनुरूप है।
जग-जन-कला इसको भला कुछ हानि क्यों पहुँचा सके,
जिसको हरित परिधान पहनाते स्वयम् विधि-कर थके।
वर वारिदों के हाथ में जलदान का सुप्रबन्ध है,
मारुत बनी परिचारिका देती समोद सुगन्ध है।
खल खेह के आतंक की पुर में पड़ी छाया नहीं,
तज कर हरा चख सामने रंग और था आया नहीं।
प्रिय हरित पट सज्जित सकल शिल-शैल शोभित थे जहाँ,
रज खेह के भी स्थान पर उड़ता हरित रंग ही वहाँ।

दुखदा शिशिर आतंक हो क्या नव्यता के ओक में,
विधि-अङ्क में रक्षित रहे जो सर्वदा गिरि-लोक में।
नव हरित कुञ्ज वितान तरुवर सघन भूमि मनोहरा,
मारुत सुशीतल मन्द, शुचि जल-स्रोत स्वच्छ सुधा भरा।
बाहुल्य साज समाज का इस हरित रम्य प्रदेश में,
ऋतुराज-श्री-सौरभ सहित नित प्रति बसे नव वेश में।
लावण्य-सर-उर में बसा सुषमा—सरोरुह—पुञ्ज-सा,
गिरि-विटप-पंक्ति सुसज्जिता में विलसता सुठि कुञ्ज-सा।
परिश्रान्त होकर पथिक आ' विश्राम लेते जो कभी,
प्रहरी समान प्रणाम करते हैं उन्हें गिरि-तरु सभी।
जन-सदन कल रव से परे सुख-सौख्य के आगार हैं,
गिरि-शृङ्ग लख बरबस हिए में उमड़ते सुविचार हैं।
'क्या प्रकृति का नर पर प्रभाव अनूप ही कुछ छा गया,
भ्रू-भृकुटि किंवा है विकट सुललाट पर बल आ गया'।
गिरि-शिखर से निज दृष्टि यदि सम भूमि ओर फिराइए,
कल कुञ्चिता कुन्तल-सरित में चकित मति भरमाइए।
लख वक्र गति नद नीर चख को स्वतः होता भान है,
मानो रहा कर तीव्र गति से श्वेत सर्प पयान है।
पर जा समीप विलोकने से भेद खुलता आप है,
जब दृष्टि लखती प्रकृति का कमनीय कार्य-कलाप है।
शुभ शैल वातावरण में ऐसे पवन का वास है,
जीवातमा को नींद आती सुखकरी सहुलास है।

चहुँ ओर पूर्ण सुशान्ति का छाया हुआ है राज्य-सा,
दुख-द्वन्द्व कटु कल रव वहाँ पर सर्वथा है त्याज्य-सा।
विह्वल-प्रकृति-संगीत का आभास कुछ मिलता यहाँ,
द्रुम—बल्लरी क्या उर शिला का गान से हिलता यहाँ।
क्या चाहना 'मिज़राब' की ऐसे अनूठे गान को,
है कान की गणना न कुछ, यह बेधता नर प्राण को।
कुछ हो भरा जिसका हृदय इस गान को वह सुन सके,
जग-वेदना-विह्वल मनुज इस गान को बस गुन सके।
है मद्यमद-सा गान यह मेरे हृदय में बस गया,
मन चाहता लय में निलय, ऐसा सुलय में फँस गया।
एकाकिनी कुटिया ललित में प्रकृति का आगम हुआ,
कुल-कानि छोड़ी चाव-चख ने तब दरस अनुपम हुआ।
आसन सजा था वर शिला का हरित तरुवर के तले,
शीतल सुधा सम जल भरित शुचि स्रोत बहता चख तले।
नव नित्य नूतन अति पुरातन प्रकृतिसम सज्जित भली,
विटपालि पवि-पाषाण-पति अनुरागमय लज्जित भली।
उन्मत्त थे चेतन अचेतन प्रेम-मदिरा में छके,
गिर-तरु जलाशय खेहरज सब प्रेम-आसव पी थके।
यह शैल, द्रुम क्या, कौन हैं? यह मानवी समुदाय क्या?
खग कौन हैं? है वायु क्या? अम्बर सजल सुखदाय क्या?
सब सजग जीवन-ज्योति के सुखसार तत्त्व स्वरूप हैं,
ध्रुव ध्येय सब का एक है, पर यों पृथक गुण-रूप हैं।

यह प्रकृति के उर-अंश हैं, फिर वैर जिनमें कुछ नहीं,
सब एक गोदी के पले, वैषम्य जिनमें कुछ नहीं।
अवनति क्रमण करता प्रकृति स्वर बल इन्हीं का पा रहा,
सब उसी स्वर की ललित लय हैं जो कि जग को भा रहा।
है पृथक जीवन-भेद अपना कुछ किसी से भी नहीं,
हम और निर्झर एक हैं असमानता कुछ भी नहीं।
तन मृत्तिका का है हमारा, नीर उसका तन सही,
जो सजग जीवन-ज्योति हम में, नीर में वह गति कही।
इस भाव में डूबी हुई, नव भावना सुख पार ही,
थी वार देती चेतना सुध-बुध स्वकर से जा रही।
मन में अमर अभिलाष थी यह जो सदा आकुल किए,
तज वन्दि-गृह जीवातमा इस रम्य-थल में ही जिए।
सद्गति कभी यदि प्राप्त हो तो इसी तरुवर के तले,
वन जाय शुभ्र समाधि अपनी पुण्य पयसर के तले।
तात्पर्य यह, अन्तर विलोचन से छटा हमने लखी,
जो जन्म-दिन से थी तजी वह कलित कुटिया फिर लखी।
इस मार्ग को करके क्रमण आनन्द नूतन पा गए,
पर वाटिका लख युगल लोचन थे कभी न अघा गये।
उर को मिला अवसर कि ऐसे अतिथि-सेवक से मिले,
ले जिसे देहरादून समझे जगत को पद-रज तले।
यह अतिथि-सेवक विमल दल शुभ शिष्टता का चित्र है,
जिससे कि परिभाषित हुआ यह मानवी सुचरित्र है।